**HISTORY**

**B.A.(Hon's) PART-I**

**Paper-I (Ancient Indian History)**

**Unit-II (Mecodonian Invasion)**

**Dr. GUDDY KUMARI**

**(Guest Lecturer), History Deptt.**

**A.N.D. College, Samastipur**

**Lecture Series - 39**

# "यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर की सफलता के कारण,

# एवं भारत पर सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव"

यूनानी आक्रमण के समय पश्चिमोत्तर भारत छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था और उनमें कुछ गणतंत्रात्मक और कुछ राजतंत्रात्मक राज्य थे। राजतंत्रात्मक राज्यों में तक्षशिला अभिसार और पूरु राज्य थे। राजतंत्र गणतंत्र के विरोधी थे। इस प्रकार राजनीतिक अवस्था आक्रमणकारीयों के पूर्णत: अनुकूल थी। सिकंदर ने इस स्थिति का अध्ययन कर उससे लाभ उठाने का प्रयत्न किया। सिकंदर का सौभाग्य था कि किसी भी स्थान पर उस की सेनाओं को भारत की संयुक्त एवं संगठित सेना का सामना नहीं करना पड़ा। कुछ स्वार्थी देशद्रोही और नीच व्यक्तियों तथा राजाओं ने सिकंदर को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इनमें दो व्यक्तियों के नाम विशेष उल्लेखनीय है– शशि गुप्त और अम्भी। इस तरह इनकी सहायता से सिकंदर भारत पर आक्रमण कर सफलता हासिल किया।

**# सिकन्दर की सफलता के कारण....**

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

सिकन्दर व उसकी सेना नि:सन्देह अत्यन्त शक्तिशाली एवं पराक्रमी थी, किंतु भारतीय भी उनसे किसी प्रकार कम न थे। स्वयं यूनानी लेखकों ने भातरीयों को एशिया के सर्वश्रेष्ठ योद्धा स्वीकार किया है। इसके पश्चात् भी सिकन्दर अपने अभियान सफल हुआ।

**सिकंदर की सफलता एवं भारतीयों की असफलता के अनेक कारण थे, जो इस प्रकार हैं:–**

✓**राजनीतिक एकता का अभाव:–** जिस समय सिकन्दर ने अपना भारतीय अभियान किया। उस समय सम्पूर्ण उत्तर–पश्चिमी भारत छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त या। अतः सिकन्दर का सामना करने के लिए भारत में संगठित शक्ति का अभाव था। सिकन्दर एक के पश्चात एक राज्यों पर विजय प्राप्त करता रहा। यदि उस समय उत्तर–पश्चिमी भारत किसी एक सम्राट के अधीन होता तो सम्भवतः सिकन्दर अपने अभियान में सफल न हो पाता।

✓**पारस्परिक बैमनस्यता–** उ.प. भारत छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था तथा उन राज्यों में पारस्परिक वैमनस्य था। एक राज्य की पराजय पर दूसरा राज्य खुशियां मनाता था। एक राज्य पर जब सिकंदर आक्रमण करता था तो दूसरा सिकंदर को सहायता पहुंचाता था। तक्षशिला के शासक आम्भि ने तो सिकन्दर को भारतीय अभियान के लिए आमन्त्रित किया था क्योंकि वह कैकय राज्य के शासक पोरस को नीचा दिखाना चाहता था। इसी प्रकार शशिगुप्त ने भी सिकंदर की मदद की थी।

भारत के छोटे–छोटे राज्यों के साथ विजय पाने के लिए सिकन्दर को जिन संकटों सामना करना पड़ा था, उनसे स्पष्ट है कि यदि भारत के ही कतिपय देशद्रोही यूनानियों से न मिल गए होते तो सिकन्दर अपने अभियान में सफल न हो पाता।

✓**अन्य भारतीय राज्यों की उदासीनता—**जिस समय सिकन्दर उत्तर–पश्चिम भारत के राज्यों पर विजय प्राप्त कर रहा था, पूर्वी भारत में स्थित विशाल नन्द–साम्राज्य के शासक धननन्द ने विदेशी आक्रमण के विरुद्ध उत्तर–पश्चिमी राज्यों की किसी

Dr Guddu kumari (A.N.D College)

प्रकार की मदद नहीं की। धननन्द का राज्य व्यास नदी तक विस्तृत था, अतः यदि वह चाहता तो सरलतापूर्वक उन राज्यों की सहायता कर सकता था। इसके विपरीत, सहायता पहुंचाना तो दूर धननन्द पश्चिमोत्तर में हो रही घटनाओं के प्रति उदासीन होकर उपेक्षा का रूप धारण कर पाटलिपुत्र में ही बैठा रहा। धननंद इतना शक्तिशाली सम्राट था कि वह अकेला ही सिकन्दर को परास्त करने के लिए पर्याप्त था. किन्तु उसने उत्तर–पश्चिम भारत पर आए इस संकट को दूर करने का कोई प्रयास न किया।

✓**सिकन्दर का नेतृत्व–** सिकन्दर की विजय में उसके व्यक्तित्व एवं कुशल नेतृत्व का भी प्रमुख योगदान था। जिन राज्यों ने सिकंदर का सामना किया उनके साधन विश्व–विजय का स्वप्न देखने वाले सिकंदर के मुकाबले में नगण्य थे उनके पास न तो सिकन्दर के समान कुशल एवं प्रशिक्षित सेना थी और न ही उसके समान श्रेष्ठ रणकौशल एवं नेतृत्व करने की क्षमता। भारतीयों की युद्ध–पद्धति समयानुकूल न थी। भारतीयों को हस्ति–सेना पर विशेष विश्वास था। जो यूनानियों की द्रुतगामी अश्व सेना के सम्मुख सफल न हो सकी।

✓**भारतीय सेना की दुर्बलता—**स्मिथ, आदि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सिकन्दर की विजय का मुख्य कारण भारतीय सेना का कमजोर होना था। किन्तु इस बात को स्वीकार करना कठिन है क्योंकि जैसा कि पहले भी लिखा जा चुका है स्वयं यूनानी लेखकों ने भारतीय सैनिकों के पराक्रम की प्रशंसा की है व भारतीयों को एशिया के सर्वश्रेष्ठ योद्धा बताया है। इसके अतिरिक्त, सिकन्दर का अपने भारतीय अभियान के दौरान भारत के छोटे–छोटे राज्यों से ही सामना हुआ था, तथा उन्हीं राज्यों के साथ युद्धों ने उसकी सेना को इतना भयभीत कर दिया कि वे आगे बढ़ने का साहस ही नहीं कर पाए। भारत की वास्तविक शक्तिशाली सेना तो मगध–साम्राज्य की थी, किन्तु मगध–साम्राज्य पर आक्रमण करने का साहस यूनानियों में न था। अतः डॉ. स्मिथ के मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

✓**आकस्मिक कारण :–** सिकंदर की विजय प्राप्त करने में कुछ आकस्मिक कारणों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उदाहरणार्थ, जिस समय सिकन्दर व पोरस के मध्य

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

युद्ध हो रहा था, अचानक हुई अत्यधिक वर्षा ने इस युद्ध के परिणाम को ही बदल दिया। पोरस की सेना की प्रमुख शक्ति रथ–सेना व धनुर्धारी सैनिकों में निहित थी। वर्षा के कारण युद्ध–स्थल पर कीचड़ हो गई तथा रथों के पहिए उसमें फंस गए तथा भूमि फिसलनी हो जाने से घोड़े रथों को खींचने में असमर्थ हो गए। अतः पोरस की रथ–सेना बेकार हो गई। इसी प्रकार धनुर्धारी सैनिकों का कौशल भी व्यर्थ हो गया क्योंकि बार–बार फिसल जाने तथा वर्षा के कारण उनके बाणों का गति शिथिल हो गई इसके अतिरिक्त, हस्ति–सेना, जिस पर पोरस को अत्यधिक भरोसा था, भी असफल हो गई क्योंकि सैनिकों ने हाथियों के पांव एवं सूंढों पर आघात किया तो हाथी बिगड़ गए व पलट कर अपनी ही सेना को रौंदने लगे ।

**# सिकन्दर के आक्रमण के प्रभाव**

सिकन्दर भारत में 19 महीने रहा था। वह भारत में आंधी की तरह आया और आंधी की तरह चला गया। इसीलिए भारतीय इतिहास पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा परंतु भारत का पश्चिमोत्तर हिस्सा उनके प्रभाव से अछूता भी नहीं रह सका। अप्रत्यक्ष रूप से उसने भारतीय एकता और सैनिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया। सिकंदर के आक्रमण के निम्नलिखित प्रभाव हुए:–

**✓राजनीतिक प्रभाव:––** सिकन्दर के आक्रमण का सबसे प्रमुख प्रभाव राजनीतिक हुआ, क्योकि इसने भारत की राजनीतिक एकता के लिए मार्ग प्रशस्त किया। सिकन्दर ने उत्तर–पश्चिम भारत के छोटे–छोटे राज्यों को जीतकर यह स्पष्ट कर दिया कि विदेशी शक्ति का सामना करने के लिए राजनीतिक एकता आवश्यक है। डॉ. हेमचन्द्र राय चौधरी ने लिखा है कि जिस प्रकार पूर्वी भारत में धननन्द ने राजनीतिक एकता स्थापित करने में चन्द्रगुप्त के कार्य (भारत को राजनीतिक एकता प्रदान करना) को आसान बनाया था। उसी प्रकार उत्तर–पश्चिम में सिकन्दर के कार्यों ने चन्द्रगुप्त की सहायता की। सिकन्दर के आक्रमण ने उत्तर–पश्चिमी भारत के राज्यों की शक्ति को चूर–चूर कर दिया था, अतः चन्द्रगुप्त को उन प्रदेशों पर विजय प्राप्त करने में सफलता हुई।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

सिकन्दर के आक्रमण ने पश्चिमोत्तर भारत की सैन्य दुर्बलता को स्पष्ट कर दिया, अतः सैन्य–संगठन की भावना प्रबल हुई। इस प्रकार यूनानी आक्रमण ने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय एकता और सैनिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया।

✓**ऐतिहासिक प्रभाव :––**प्रो रोमिला थापर ने लिखा है कि सिकन्दर के आक्रमण का सर्वाधिक उल्लेखनीय परिणाम न राजनीतिक था, न सैनिक। उसका महत्व इस बात में निहित है कि वह अपने साथ कुछ ऐसे यूनानियों को लाया था। जिन्होंने भारत के विषय में अपने विचारों को लिपिबद्ध किया। और वे इस बात पर प्रकाश डालने की दृष्टि से मूल्यवान है। इन स्रोतों से ज्ञात होता है कि उत्तर पश्चिमी भारत में तब भी कुछ अनार्य प्रथाएं प्रचलित थी।

✓**व्यापारिक प्रभाव:–** यूनान की मुख्य भूमि से चलकर यूनानी सेना पश्चिम एशिया तथा ईरान को पार करती हुई भारत पहुंची थी और इस प्रकार उसने अफगानिस्तान तथा ईरान होते हुए एशिया माइनर से और पूर्वी भूमध्य सागर के किनारे बसे बंदरगाहों से उत्तर पश्चिमी भारत तक अनेक व्यापारिक मार्ग खोल दिए और उन्हें उपयोगी बना दिया। इससे पूर्व पश्चिम के व्यापार में वृद्धि हुई।

✓**नगरों का विस्तार एवं शिल्पियों की संख्या में वृद्धि:––**उत्तर–पश्चिमी भारत और पश्चिमी एशिया के मध्य व्यापार की सम्भावनाओं ने नगरों के विकास को प्रोत्साहित किया।

नगरों के विस्तार के साथ–साथ शिल्पीओ की संख्या में भी वृद्धि हुई। जो श्रेणियों में संगठित थे। प्रत्येक श्रेणी नगर के एक निश्चित भाग में बसी हुई थी, जिससे एक श्रेणी के सदस्य एक साथ रहकर कार्य कर सकें। ज्यादातर पुत्र अपने पिता का व्यवसाय अपनाते थे।

✓**सांस्कृतिक प्रभाव:––** सिकन्दर के आक्रमण के परिणामस्वरूप भारतीय व यूनानी परस्पर संपर्क में आए, अतः उनमें सांस्कृतिक आदान–प्रदान होना स्वाभाविक था। यूनानियों ने भारतीयों को ज्योतिष, कला तथा सिक्के बनाने की कला के क्षेत्र में

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

प्रभावित किया। यूनानियों को सुंदर सिक्के (मुद्राएं) बनाना आता था। अतः भारतीयों ने भी उनसे अच्छे सिक्के बनाना सीखा। यूनानियों पर भी भारतीय दर्शन वह धर्म का प्रभाव हुआ।

✓**तिथिक्रम का ज्ञान :––** यूनानी आक्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि इसने प्राचीन भारत के तिथिक्रम की अनेक गुत्थियों को सुलझा दिया। इससे भारत के क्रमागत इतिहास को लिखने में बड़ी सहायता मिली। यूनानी लेखकों ने महत्वपूर्ण घटनाओं व शासकों की तिथियों का उल्लेख किया है तथा जगह–जगह समकालीन भारतीय शासकों का भी। अत: भारतीय तिथिक्रम पर यूनानी साहित्य से प्रकाश पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चाहे सिकंदर के आक्रमण का स्थाई राजनीतिक प्रभाव नहीं हुआ, परंतु इसमें संदेह नहीं है कि कुछ क्षेत्रों में अवश्य ही भारत यूनानीयों से प्रभावित हुआ था। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव ना होने का कारण यह है कि सिकंदर और उसके क्षत्रप भारत में बहुत थोड़े दिनों तक रहे और जनता से घनिष्ठ संबंध स्थापित नहीं कर सके। इसके अतिरिक्त भारतीय सभ्यता और संस्कृति पहले से काफी विकसित थी। अत: साहित्य, दर्शन व कला आदि के विकास के लिए उसे विदेशियों की सहायता की आवश्यकता नहीं थी।

**धन्यवाद**

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)